## काव्य प्रयोजन



Page No.:
Date: / /

(2) काव्यशास्त्र के लक्षण-ग्रन्थों में काव्यप्रकाश का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। काव्यप्रकाश के रचयिता आचार्य मम्मट हैं। मम्मट कश्मीर के निवासी माने जाते हैं। विद्वान इन्हें नैषधीयचरित्र के रचयिता श्रीहर्ष का मामा और कश्मीरदेशीय जैयट का पुत्र मानते हैं।

मम्मटाचार्य अपने काव्यप्रकाश में दशम् उल्लास में उदात्त अलंकार के उदाहरण में 'भोजनृपतेस्तत् त्यागलीलायितम्' का उल्लेख किया है जिससे विद्वान इन्हें भोज का परवर्ती मानते हैं। भोज का काल 996 ई० से 1051 ई० तक माना जाता है। अतः मम्मट का काल 11वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध माना जाता है।

भरतमुनि से लेकर भोजराज तक लगभग 1200 वर्षों में अलङ्कारशास्त्र के विषय में जिस विशाल साहित्य का निर्माण हुआ उसका मम्मट ने मंथन करके सारभूत "नवनीत" काव्यप्रकाश में प्रतिपादित किया।

आचार्य मम्मट काव्य प्रकाश में काव्य का प्रयोजन बतलाते हुए कहा है —

काव्यं यशसेऽर्थकृते
व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृतये
कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥

अर्थात् काव्य का यश के लिए, अर्थ के लिए, व्यवहारज्ञान के लिए, अकल्याण के नाश के लिए, सद्यः परमानन्द देने के लिए तथा स्त्री के समान सरस रूप से कर्तव्याकर्तव्य का उपदेश करने वाला होता है।

इसके वृति में कहते हैं —

"कालिदासादीनामिव यशः श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्, राज्ञादिगतोचितव्यवहारपरिज्ञानम् आदित्यादेर्मयूरादीनामिवानर्थनिवारणम्, सकलप्रयोजनमौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वादनसमुद्भूतं विगलितवेद्यान्तरमानन्दम्, प्रभुसम्मितशब्दप्रधानवेदादिशास्त्रेभ्यः सुहृत्सम्मितार्थ

तात्पर्यवत्पुराणादीतिहासेभ्यश्च शब्दार्थयो-
र्गुणभावेन रसाङ्गभूतव्यापारप्रवणतया विलक्षणं
यत्काव्यं लोकोत्तरवर्णनानिपुणं कविकर्म तत्
कान्तेव सरसतापादनेनाभिमुखीकृत्य रामादि-
वद्वर्तितव्यं न रावणादिवत् इति उपदेशं
च करोति इति सर्वथा तत्र यतनीयम्।"

अर्थात् काव्य के छः प्रयोजन मम्मट ने काव्य प्रकाश में बतलाते हुए कहा-

"काव्य कालिदास आदि कवियों के समान यश की प्राप्ति के लिए है। रत्नावली नाटिका के प्रणेता राजा श्रीहर्ष आदि से धावक आदि पण्डितों के समान धन की प्राप्ति कराने के लिए है। राजादिगत उचित आचार-व्यवहार ज्ञान करवाने के लिए काव्य है। सूर्य आदि की स्तुति से मयूर आदि के कुष्ठ-निवारण के समान अनर्थों का निवारण करवाने के लिए काव्य है। इन सभी प्रयोजनों में मुख्य रस के आस्वादन से समुत्पन्न और अन्य विषयों के परिज्ञान से शून्य

परम आनन्द की अनुभूति काव्य का प्रयोजन है। यह काव्य शब्द प्रधान-वेदादि शास्त्रों से विलक्षण तथा अर्थ प्रधान पुराण-इतिहास आदि से विलक्षण है। शब्द और अर्थ दोनों के गुणीभाव के कारण रस के साधक व्यापार की प्रधानता के कारण वेद-शास्त्र, पुराण-इतिहास आदि से विलक्षण लोकोत्तर वर्णन-शैली में निपुण कवि का कर्म (काव्य) स्त्री के समान सरसता के साथ रामादिवत आचरण करना चाहिए न कि रावणादिवत्। यह यथायोग्य उपदेश करना काव्य का प्रयोजन है।"

उक्त लक्षण में यशसे से अर्थकृते तथा शिवेतरक्षतये - ये तीन प्रयोजन मुख्यतः कवि के उद्देश्य से है तथा व्यवहारविदे सद्यः परनिर्वृतये एव कान्तासम्मिततया - उपदेशयुजे - यह तीन प्रयोजन पाठक की दृष्टि से है, ऐसा व्याख्याकार कहते हैं।

## काव्य के हेतु

(3) काव्यशास्त्र के लक्षण-ग्रन्थों में काव्यप्रकाश का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। काव्यप्रकाश के रचयिता आचार्य मम्मट हैं। मम्मट कश्मीर के निवासी माने जाते हैं। विद्वान इन्हें "नैषधीय-चरित" के रचयिता श्रीहर्ष का मामा और कश्मीरदेशीय जैयट का पुत्र मानते हैं।

मम्मटाचार्य अपने काव्यप्रकाश में दशम उल्लास में उदात्त अलंकार के उदाहरण में 'भोजनृपतेस्तत् त्यागलीलायितम्' का उल्लेख किया है जिससे विद्वान इन्हें भोज का परवर्ती मानते हैं। भोज का काल 996 ई० से 1051 ई० तक माना जाता है। अतः मम्मट का काल 11वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध माना जाता है।

भरतमुनि से लेकर भोजराज तक लगभग 1200 वर्षों में अलङ्कारशास्त्र के विषय में जिस विशाल साहित्य का निर्माण हुआ उसका मम्मट ने मंथन करके सारभूत "नवनीत" काव्यप्रकाश में प्रतिपादित किया।

आचार्य मम्मट ने काव्य प्रकाश में काव्य के हेतु बतलाते हुए कहा।

"शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥"

अर्थात (1) कवि में रहने वाली स्वाभाविक प्रतिभारूप शक्ति (2) लोक व्यवहार शास्त्र तथा काव्यादि के पर्यालोचन से उत्पन्न निपुणता और (3) तीसरा काव्य की रचना-शैली एवं आलोचना पद्धति को जानने वाले गुरु की शिक्षा के अनुसार काव्य-निर्माण का अभ्यास ये तीनों सम्मिलित रूप से काव्य के हेतु हैं।

कारिका की वृति में कहते हैं -
"शक्तिः कवित्वबीजरूपः संस्कारविशेषः यां विना काव्यं न प्रसरेत्, प्रसृतं वा उपहसनीयं स्यात्। लोकस्य स्थावर-जङ्गमात्मकस्य लोकवृत्तस्य शास्त्राणां छन्दोव्याकरणाभिधानकोशकलाचतुर्वर्गगज-तुरगखड्गादिलक्षणग्रन्थानाम्, काव्यानां च महाकविसम्बन्धिनाम् आदिग्रहणादितिहासादीनां च विमर्शनादव्युत्पत्तिः। काव्यं कर्तुं विचारयितुं च ते जानन्ति तदुपदेशेन

करणे योजने च पौनः पुन्येन प्रवृत्तिरिति त्रयः समुदिताः न तु व्यस्ताः तस्य काव्यस्योद्भवे निर्माणे समुल्लासे च हेतुर्न तु हेतवः ।।

अर्थात् शक्ति कवित्वबीज रूप संस्कार विशेष है, जिसे प्रतिभा भी कहते हैं। जिसके बिना काव्य निर्माण हो ही नहीं सकता, शक्ति अर्थात प्रतिभा के बिना जो काव्य निर्माण होगा वो हास्यस्पद होगा, उपहसनीय होगा।

निपुणता जो कि लोक शास्त्र और काव्य आदि के पढ़ने समझने से आती है, उस निपुणता को भी काव्य हेतु में अनिवार्य माना गया है। लोक के व्यवहार को जानकर अर्थात् काव्य के निर्माण के लिए समाज द्वारा स्वीकृत मान्यताओं को ध्यान में रखकर ही काव्य का निर्माण करने से काव्य लोक प्रसिद्ध होता है। लौकिक ज्ञान के अलावा शास्त्री ज्ञान भी अपेक्षित है। छन्द, व्याकरण, कला-कोश आदि का ज्ञान भी

काव्य निर्माण में अपेक्षित निपुणता के लिए सहायक तत्व है तथा काव्य आदि के पूर्वाचार्यों ने किन-किन तत्वों को काव्य उत्तम काव्य के निर्माण में जरूरी बताया है। इसका ज्ञान होना भी आवश्यक है। इस प्रकार काव्य हेतु में दूसरा तत्व निपुणता है जो लोक शास्त्र काव्य आदि के अवेक्षण से प्राप्त होती है।

काव्यज्ञ आचार्यों के समीप बैठकर काव्य के मर्म को समझ कर काव्यों के निर्माण के लिए बारम्बार अभ्यास करना काव्यज्ञ-शिक्षाभ्यास है। फलतः ये तीनों मिलकर समष्टि रूप से काव्य के हेतु हैं।

# मंगलाचरण

(1)

काव्यशास्त्र के लक्षण ग्रन्थों में काव्यप्रकाश का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। काव्यप्रकाश के रचयिता आचार्य मम्मट हैं। मम्मट कश्मीर के निवासी माने जाते हैं। विद्वान इन्हें नैषधीय-चरित्र के रचयिता श्रीहर्ष का मामा और कश्मीरदेशीय जैयट का पुत्र मानते हैं।

मम्मटाचार्य अपने काव्यप्रकाश में दशम उल्लास में उदात्त अलंकार के उदाहरण में 'भोजनृपतेस्तत्-त्यागलीलायितम्' का उल्लेख किया है जिससे विद्वान इन्हें भोज का परवर्ती मानते हैं। भोज का काल 996 ई० से 1054 ई० तक माना जाता है। अतः मम्मट का काल 11वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध माना जाता है।

भरतमुनि से लेकर भोजराज तक लगभग 1200 वर्षों में अलङ्कारशास्त्र के विषय में जिस विशाल साहित्य का निर्माण हुआ उसका मम्मट ने मंथन करके सारभूत "नवनीत" काव्यप्रकाश में प्रतिपादित किया।

भारतीय परम्परा में मंगलाचरण ग्रन्थ के आदि, मध्य या अन्त

में किया जाता है जो नमस्कारात्मक आशीर्वादात्मक एवं वस्तुनिर्देशात्मक होता है।

आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में कवि की भारती का जय-जयकार करते हुए नमस्कारात्मक मंगलाचरण किया है।
आचार्य मम्मट कहते हैं:—

"नियतिकृतनियमरहितां
ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती
भारती कवेर्जयति॥"

अर्थात् - नियति के द्वारा निर्धारित नियमों से रहित केवल आनन्दमात्र स्वभाव वाली, कवि की प्रतिभा के अतिरिक्त किसी अन्य के अधीन न रहने वाली तथा दुःखरसों के स्थान पर नौ रसों के योग से मनोहारिणी काव्य सृष्टि की रचना करने वाली कवि की भारती (वाणी सरस्वती) सर्वोत्कर्ष-शालिनी है।

कारिका की वृति इस प्रकार है -
"नियतिशक्त्या नियतरूपा सुख दुःख मोहस्वभावा परमाणवादि-उपादान-कर्मादि-

सहकारि कारण-परतन्त्रा षड्रसा न च
ह्रद्यैव तैः, तादृशी ब्रह्मणो निर्मितिर्निर्माण
एतद् विलक्षणा तु कविवाङ्निर्मितिः।
अत एव जयति। जयति इति
अर्थेन च नमस्कार आक्षिप्यत इति
तौ प्रत्यस्मि प्रणत इति लभ्यते।"

तात्पर्यार्थ – ब्रह्मा की सृष्टि नियति के सामर्थ्य से निश्चित स्वरूप वाली है, त्रिगुणात्मक होने से सुख दुःख-मोह स्वभाव से युक्त है परमाणु आदि उपादान कारण एवं कर्मादि सहकारी-कारण के अधीन है। छः रसों से युक्त है। इसके विपरीत कवि की सृष्टि नियति के नियम से रहित है, उसका नियत-स्वरूप नहीं है यह सुखदुःखमोहस्वभावा नहीं है अर्थात् इसमें केवल आह्लाद ही एकमात्र गुण है (करुण रस में भी आनन्द है यहाँ) यह कवि की सृष्टि कवि के ही अधीन है अर्थात् स्वतन्त्र है, ब्रह्मा की सृष्टि की तुलना में इसमें नवरस है। ब्रह्मा की सृष्टि में मधुर-अम्ल-लवण-कटु-कषाय-तिक्त छः रस ही हैं किन्तु कवि के काव्य में

(4)

शृंगार - हास्य - करुण - रौद्र - वीर - भयानक - बिभत्स - अद्भुत और शान्त ये नवरस है। इसलिए कवि की भारती विजयशालिनी (सर्वोत्कर्ष से युक्त) है।

यहाँ मम्मट ने जयति क्रिया के अर्थ से कवि भारती के प्रति नमस्कार आक्षिप्त किया है। इस प्रकार मम्मटाचार्य ने ब्रह्मा की सृष्टि की अपेक्षा कवि की सृष्टि में चार विशेषण बतलाया है -

(i) नियतिकृतनियमरहिताम्
(ii) ह्लादैकमयीम्
(iii) अनन्यपरतन्त्राम्
(iv) नवरसरुचिराम्

इस कारिका में मम्मटाचार्य ने व्यतिरेकालंकार का प्रयोग किया है क्योंकि यहाँ उपमान से उपमेय का अधिकत्व वर्णन किया गया है। इस कारिका में आर्या छन्द के गीति नामक भेद का लक्षण पाया जाता है।